महाशिवरात्रि व्रत का रहस्य

जयप्रकाश शर्मा
पाण्डुलिपि विशेषज्ञ
वैदिनक हेरिटेज एवं पाण्डुलिपि शोध संस्थान, जयपुर

महाशिवरात्रि व्रत फाल्गुन मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी तिथि को किया जाता है। इस व्रत को अर्धरात्रिव्यापिनी चतुर्दशी तिथि में करना चाहिये, चाहे यह तिथि पूर्वा (त्रयोदशीयुक्त) हो, चाहे परा हो। नारदसंहिता के अनुसार जिस दिन फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी तिथि आधी रात के योगवाली हो उस दिन जो शिवरात्रि व्रत करता है, वह अनन्त फल को प्राप्त करता है। इस सम्बन्ध में तीन पक्ष हैं- १-चतुर्दशी को प्रदोषव्यापिनी, २-निशीथ (अर्धरात्रि) व्यापिनी एवं ३-उभयव्यापिनी। व्रतराज, निर्णयसिन्धु तथा धर्मसिन्धु आदि ग्रन्थों के अनुसार निशीथव्यापिनी चतुर्दशी तिथि को ही ग्रहण करना चाहिये। अतः चतुर्दशी तिथि का निशीथव्यापिनी होना ही मुख्य है, परंतु इसके अभाव में प्रदोषव्यापिनी के ग्राह्य होने से यह पक्ष गौण है। इस कारण पूर्वा या परा दोनों में जो भी निशीथव्यापिनी चतुर्दशी तिथि हो, उसीमें व्रत करना चाहिये।

चतुर्दशी के स्वामी शिव

ज्योतिषशास्त्र के अनुसार प्रतिपदा आदि सोलह तिथियों के अग्नि आदि देवता स्वामी होते हैं, अतः जिस तिथि का जो देवता स्वामी होता है, उस देवता का उस तिथि में व्रत पूजन करने से उस देवता की विशेष कृपा उपासक को प्राप्त होती है। चतुर्दशीतिथि के स्वामी शिव हैं अथवा शिव की तिथि चतुर्दशी है। अतः इस तिथि की रात्रि में व्रत करने के कारण इस व्रतका नाम 'शिवरात्रि' होना उचित ही है। इसीलिये प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी में शिवरात्रिव्रत होता है, जो मासशिवरात्रि व्रत कहलाता है। शिवभक्त प्रत्येक कृष्णचतुर्दशी का व्रत करते हैं, परंतु फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी को अर्धरात्रि में 'शिवलिङ्गतयोद्भतः कोटिसूर्यसमप्रभः ' - ईशानसंहिता के इस वचन के अनुसार ज्योतिर्लिङ्ग का प्रादुर्भाव होने से यह पर्व महाशिवरात्रि के नाम से विख्यात हुआ। इस व्रत को ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शुद्र, स्त्री-पुरुष और बाल-युवा-वृद्ध आदि सभी कर सकते हैं। जिस प्रकार श्रीराम, श्रीकृष्ण, वामन और नृसिंह जयन्ती तथा प्रत्येक एकादशी का व्रत हरेक को करना चाहिये, उसी प्रकार महाशिवरात्रि व्रत भी सभी को करना चाहिये। इसे न करने से दोष लगता है।

व्रत का महत्त्व

शिवपुराण की कोटिरुद्रसंहिता में बताया गया है कि शिवरात्रि व्रत करने से व्यक्ति को भोग एवं मोक्ष दोनों ही प्राप्त होते हैं। ब्रह्मा, विष्णु तथा पार्वतीजी के पूछने पर भगवान् सदाशिव ने बताया कि शिवरात्रिव्रत करने से महान् पुण्य की प्राप्ति होती है। मोक्षार्थी को मोक्ष की प्राप्ति कराने वाले चार व्रतों का नियमपूर्वक पालन करना चाहिये। ये चार व्रत हैं- १-भगवान् शिव की पूजा, २- रुद्रमन्त्रों का जप, ३-शिवमन्दिर में उपवास तथा ४-काशी में देहत्याग। शिवपुराण में मोक्ष के चार सनातन मार्ग बताये गये हैं। इन चारों में भी शिवरात्रिव्रत का विशेष महत्त्व है। अतः इसे अवश्य करना चाहिये। यह सभी के लिये धर्मका उत्तम साधन है। निष्काम अथवा सकामभाव से सभी मनुष्यों, वर्णों, आश्रमों, स्त्रियों, बालकों तथा देवताओं आदि के लिये यह महान् व्रत परम हितकारक माना गया है। प्रत्येक मास के शिवरात्रि व्रतों में भी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी में होने वाले महाशिवरात्रि व्रत का शिवपुराण में विशेष माहात्म्य बताया गया है।

रात्रि ही क्यों?

अन्य देवताओं का पूजन, व्रत आदि जबकि प्रायः दिन में ही होता है तब भगवान् शङ्कर को रात्रि ही क्यों प्रिय हुई और वह भी फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी तिथि ही क्यों ? इस जिज्ञासा का समाधान विद्वानों ने बताया है कि 'भगवान् शङ्कर संहारशक्ति और तमोगुण के अधिष्ठाता हैं, अतः तमोमयी रात्रि से उनका स्नेह (लगाव) होना स्वाभाविक ही है। रात्रि संहारकालकी प्रतिनिधि है, उसका आगमन होते ही सर्वप्रथम प्रकाश का संहार, जीवों की दैनिक कर्मचेष्टाओं का संहार और अन्त में निद्रा द्वारा चेतनता का ही संहार होकर सम्पूर्ण विश्व संहारिणी रात्रि की गोद में अचेतन होकर गिर जाता है। ऐसी दशा में प्राकृतिक दृष्टि से शिव का रात्रि प्रिय होना सहज ही हृदयङ्गम हो जाता है। यही कारण है कि भगवान् शङ्कर की आराधना न केवल इस रात्रि में ही वरन् सदैव प्रदोष (रात्रिके प्रारम्भ होने) के समय में की जाती है।'

शिवरात्रि का कृष्णपक्ष में होना भी साभिप्राय ही है। शुक्लपक्ष में चन्द्रमा पूर्ण (सवल) होता है और कृष्णपक्ष में क्षीण। उसकी वृद्धिके साथ-साथ संसार के सम्पूर्ण रसवान् पदार्थों में वृद्धि और क्षय के साथ-साथ उनमें क्षीणता होना स्वाभाविक एवं प्रत्यक्ष है। क्रमशः घटते-घटते वह चन्द्रमा 'अमावास्या को बिलकुल क्षीण हो जाता है। चराचर जगत्के यावन्मात्र मन के अधिष्ठाता उस चन्द्र के क्षीण हो जाने से उसका प्रभाव अण्ड-पिण्डवाद के अनुसार सम्पूर्ण भूमण्डल के प्राणियों पर भी पड़ता है और उन्मना जीवों के अन्तःकरण में तामसी शक्तियाँ प्रबुद्ध होकर अनेक प्रकार के नैतिक एवं सामाजिक अपराधों का कारण बनती हैं। इन्हीं शक्तियों का अपर नाम आध्यात्मिक भाषा में भूत-प्रेतादि है और शिवको इनका नियामक (नियन्त्रक) माना जाता है। दिनमें यद्यपि जगदात्मा सूर्यकी स्थिति से आत्मतत्त्व की जागरूकता के कारण ये तामसी शक्तियाँ अपना विशेष प्रभाव नहीं दिखा पाती हैं, किंतु चन्द्रविहीन अन्धकारमयी रात्रि के आगमन के साथ ही वे अपना प्रभाव दिखाने लगती हैं। इसलिये जैसे पानी आने से पहले ही पुल बाँधा जाता है, उसी प्रकार इस

चन्द्रक्षय (अमावास्या) तिथि के आने से सद्यः पूर्व ही उन सम्पूर्ण तामसी वृत्तियों के उपशमनार्थ इन वृत्तियों के एकमात्र अधिष्ठाता भगवान् आशुतोषकी आराधना करने का विधान शास्त्रकारोंने किया है। विशेषतया कृष्णचतुर्दशी की रात्रि में शिवाराधनाका रहस्य है।

फाल्गुन कृष्ण चतुर्दशी का रहस्य

जहाँ तक प्रत्येक मास के कृष्णपक्ष की चतुर्दशी के शिवरात्रि कहलाने की बात है, वे सभी शिवरात्रि ही कहलाती हैं और पञ्चाङ्गों में उन्हें इसी नामसे लिखा जाता है, परंतु फाल्गुन की शिवरात्रि महाशिवरात्रि के नाम से पुकारी जाती है। जिस प्रकार अमावास्या के दुष्प्रभाव से बचने के लिये उससे ठीक एक दिन पूर्व चतुर्दशी को यह उपासना की जाती है, उसी प्रकार क्षय होते हुए वर्ष के अन्तिम मास चैत्र से ठीक एक मास पूर्व फाल्गुन में ही इसका विधान शास्त्रों में मिलता है जो कि सर्वथा युक्ति संगत ही है। साथ ही रुद्रों के एकादश संख्यात्मक होने के कारण भी इस पर्वका ११वें मास (फाल्गुन) में सम्पन्न होना इस व्रतोत्सव के रहस्य पर प्रकाश डालता है।

उपवास-रात्रि जागरण क्यों ?

ऋषि-महर्षियों ने समस्त आध्यात्मिक अनुष्ठानों में उपहास को महत्वपूर्ण माना है। गीता (२।५९) की इस उक्ति विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः' के अनुसार उपहास विषय-निवृत्ति का अचूक साधन है। अतः आध्यात्मिक साधना लिये उपवास करना परमावश्यक है। उपवास के साथ रात्रिजागरण के महत्त्व पर गीता (२/६९) का यह कथन अत्यन्त प्रसिद्ध है-'या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी। इसका सीधा तात्पर्य यही है कि उपवासादि द्वारा इन्द्रियों और मनपर नियन्त्रण करने वाला संयमी व्यक्ति ही रात्रि में जागकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिये प्रयत्नशील हो सकता है। अतः शिवोपासना के लिये उपवास एवं रात्रिजागरण के अतिरिक्त और कौनसा साधन उपयुक्त हो सकता है? रात्रिप्रिय शिव से भेंट करने का समय रात्रि के अलावा और कौनसा समय हो सकता है? इन्हीं सब कारणों से इस महान् व्रत में व्रतीजन उपवास के साथ रात्रि में जागकर शिवपूजा करते हैं।

पूजाविधि

शिवपुराण के अनुसार व्रती पुरुष को प्रातःकाल उठकर स्नान-संध्या आदि कर्म से निवृत्त होने पर मस्तक पर भस्म का त्रिपुण्ड्र तिलक और गले में रुद्राक्ष माला धारण कर शिवालय में जाकर शिवलिङ्ग का विधिपूर्वक पूजन एवं शिव को नमस्कार करना चाहिये। तत्पश्चात् उसे श्रद्धापूर्वक व्रत का इस प्रकार संकल्प करना चाहिये-

शिवरात्रिव्रतं ह्येतत् करिष्येऽहं महाफलम्।
निर्विघ्नमस्तु मे चात्र त्वत्प्रसादाज्जगत्पते ॥

यह कहकर हाथ में लिये पुष्पाक्षत, जल आदि को छोड़ने के पश्चात् यह श्लोक पढ़ना चाहिये-

देवदेव महादेव नीलकण्ठ नमोऽस्तु ते।
कर्तुमिच्छाम्यहं देव शिवरात्रिव्रतं तव ॥

तव प्रसादाद्देवेश निर्विघ्नेन भवेदिति ।
कामाद्याः शत्रवो मां वै पीडां कुर्वन्तु नैव हि॥

अर्थात् हे देवदेव! हे महादेव ! हे नीलकण्ठ। आपको नमस्कार है। हे देव! मैं आपका शिवरात्रि व्रत करना चाहता हूँ। हे देवेश्वर। आपकी कृपा से यह व्रत निर्विघ्न पूर्ण हो और काम, क्रोध, लोभ आदि शत्रु मुझे पीडित न करें।

रात्रिपूजा

दिनभर अधिकारानुसार शिवमन्त्र का यथाशक्ति जप करना चाहिये अर्थात् जो द्विज हैं और जिनका विधिवत् यज्ञोपवीत-संस्कार हुआ है तथा नियम पूर्वक यज्ञोपवीत धारण करते हैं, उन्हें 'ॐ नमः शिवाय' मन्त्र का ही जप करना चाहिये, परंतु जो द्विजेतर अनुपनीत एवं स्त्रियाँ हैं, उन्हें प्रणवरहित 'शिवाय नमः' मन्त्र का हो जप करना चाहिये। रुग्ण, अशक्त और वृद्धजन दिन में फलाहार ग्रहणकर रात्रि- पूजा कर सकते हैं, वैसे यथाशक्ति बिना फलाहार ग्रहण किये रात्रि पूजा करना उत्तम है। रात्रि के चारों प्रहरों की पूजाका विधान शास्त्रकारों ने किया है। सायंकाल स्नान करके किसी शिवमन्दिर में जाकर अथवा घर पर ही (यदि नर्मदेश्वर अथवा अन्य इसी प्रकार का शिवलिङ्ग हो) सुविधानुसार पूर्वाभिमुख या उत्तराभिमुख होकर और तिलक एवं रुद्राक्ष धारण करके पूजा का इस प्रकार संकल्प करे-देशकाल का संकीर्तन करने के अनन्तर बोले- 'ममाखिलपापक्षयपूर्वकसकलाभीष्टसिद्धये शिवप्रीत्यर्थं च शिवपूजनमहं करिष्ये।' अच्छा तो यह है कि किसी वैदिक विद्वान् ब्राह्मण के निर्देशन में वैदिक मन्त्रों से रुद्राभिषेक का अनुष्ठान कराया जाय।

व्रती को पूजा की सामग्री अपने पास में रखनी चाहिये- ऋतुकाल के फल-पुष्प, गन्ध (चन्दन), बिल्वपत्र, धतूरा, धूप, दीप और नैवेद्य आदि द्वारा चारों प्रहर की पूजा करनी चाहिये। दूध, दही, घी, शहद और शक्कर से अलग-अलग तथा सब को एक साथ मिलाकर पञ्चामृत से शिव को स्नान कराकर जलधारा से उनका अभिषेक करना चाहिये। चारों पूजनों में पञ्चोपचार अथवा षोडशोपचार, यथालब्धोपचार से पूजन करते समय शिवपञ्चाक्षर ('नमः शिवाय')- मन्त्रसे अथवा रुद्रपाठ से भगवान् का जलाभिषेक करना चाहिये। भव, शर्व, रुद्र, पशुपति, उग्र, महान्, भीम और ईशान इन आठ नामों से पुष्पाञ्जलि अर्पितकर भगवान् की आरती और परिक्रमा करनी चाहिये। अन्त में भगवान् शम्भु से इस प्रकार प्रार्थना करनी चाहिये-

नियमो यो महादेव कृतश्चैव त्वदाज्ञया।
विसृज्यते मया स्वामिन् व्रतं जातमनुत्तमम् ।।

व्रतेनानेन देवेश यथाशक्तिकृतेन च।
सन्तुष्टो भव शर्वाद्य कृपां कुरु ममोपरि ॥

(शिवपुराण, कोटिरुद्रसंहिता ३८।४२-४३)

अर्थात् 'हे महादेव! आपकी आज्ञा से मैंने जो व्रत किया, हे स्वामिन्! वह परम उत्तम व्रत पूर्ण हो गया।

अतः अब उसका विसर्जन करता हूँ। हे देवेश्वर शर्व!

यथाशक्ति किये गये इस व्रत से आप आज मुझ पर कृपा करके संतुष्ट हों।'

अशक्त होने पर यदि चारों प्रहर को पूजा न हो सके तो पहले प्रहर की पूजा अवश्य करनी चाहिये और अगले दिन प्रातःकाल पुनः स्नान कर भगवान् शङ्कर को पूजा करने के पश्चात् व्रत की पारणा करनी चाहिये। स्कन्दपुराण के अनुसार इस प्रकार अनुष्ठान करते हुए शिवजी का पूजन, जागरण और उपवास करनेवाले मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता।

इस महान् पर्व के विषय में एक आख्यान के अनुसार शिवरात्रि के दिन पूजन करती हुई किसी स्त्री का आभूषण चुरा लेने के अपराध में मारा गया कोई व्यक्ति इसलिये शिवजी की कृपा से सद्गति को प्राप्त हुआ; क्योंकि चोरी करने के प्रयास में वह आठ प्रहर भूखा-प्यासा और जागता रहा। इस कारण अनायास ही व्रत हो जाने से शिवजी ने उसे सद्गति प्रदान कर दी।

इस व्रत की महिमा का पूर्णरूप से वर्णन करना मानवशक्ति से बाहर है। अतः कल्याण के इच्छुक सभी मनुष्यों को यह व्रत करना चाहिये।

पर्व का संदेश

भगवान् शङ्कर में अनुपम सामञ्जस्य, अद्भुत समन्वय और उत्कृष्ट सद्भाव के दर्शन होने से हमें उनसे शिक्षा ग्रहणकर विश्व-कल्याण के महान् कार्य में प्रवृत्त होना चाहिये-यही इस परम पावन पर्व का मानवजाति के प्रति दिव्य संदेश है। शिव अर्धनारीश्वर होकर भी कामविजेता हैं, गृहस्थ होते हुए भी परम विरक्त हैं, हलाहल पान करने के कारण नीलकण्ठ होकर भी विष से अलिप्त हैं, ऋद्धि-सिद्धियों के स्वामी होकर भी उनसे विलग हैं, उग्र होते हुए भी सौम्य हैं, अकिंचन होते हुए भी सर्वेश्वर हैं, भयंकर विषधर नाग और सौम्य चन्द्रमा दोनों ही उनके आभूषण हैं, मस्तक में प्रलयकालीन अग्नि और सिर पर परम शीतल गङ्गाधारा उनका अनुपम शृङ्गार है। उनके यहाँ वृषभ और सिंह का तथा मयूर एवं सर्प का सहज वैर भुलाकर साथ-साथ क्रीडा करना समस्त विरोधी भावों के विलक्षण समन्वय की शिक्षा देता है। इससे विश्व को सह-अस्तित्व अपनाने की अद्भुत शिक्षा मिलती है।